

[illegible] १ निर्मलीकायन्न या[illegible] त्रकस्म । ननिवर्ल [illegible] ॥ शुद्धिनयाधर्पसनीं चिनों वृकस्यन ॥

[illegible]	पूर्वदाबि	जूग्रम आमय
[illegible]	मत्स्यनाम यात्र	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

लिगि

१ ॐ नमावृद्धरननम ॥ दधिगुडम, पतिदवतायर
ॐ दधिक्राव्ना ॥१॥ आमय लिगि ॥ ॐ मिवायर ॥ ॐ
शिवानामसि ॥ २ ॥ अमृत ॥ ॐ वह्निदेवतायर ॥
ॐ तलविठ ॥ ३ ॥ पूष्पराजन ॥ ॐ शिवयर ॥ ॐ श्रीश्च
तलक्ष्मी ॥ ४ ॥ क्षीर ॥ ॐ सामदेवतायर ॥ ॐ आप्या
यस्व ॥ ५ ॥ आमय ॥ ॐ जनार्द्दनायर ॥ ॐ गन्धद्वारा

॥ ६ ॥ घृत ॥ ॐ शालवदवतार ॥ ॐ दजासि ॥ ७ ॥ कूरआदक ॥ ॐ वनूतद्ववतायर
ॐ दवस्पत्वा ॥ ८ ॥ मत्स्यनामयात्र ॥ ॐ ब्रह्मरतर ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ९ ॥ ॐ सत्वया
मीति मन्त्रेण पंचगव्यं गृहित्वा ॥ पंचगव्यपूजनं ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॐ हुं दवि
ष्णु ॥ ॐ नमसरवाय ॥ पायत्रीजप७ ॥ स्नात ॥ पंचगव्य विरागक्रुत्वा ॥ तकराग
शिवस्नान ॥ तकराग जूमिस्थ ॥ तकराग जजमानाभिषक ॥ मन्त्र ॥ ॐ वावंत
सुन्धामि ब्राह्मीकस्तूंधामि वरुणेकस्तूंधामि आत्मनीस्तूंधामि नारिकस्तूंधामि मधन

हूँ धामि वायूनसूं धामि ववित्रास्त सूंधामि ॥ ॐ मनस्त आप्याय तां वाकआप्याय तां
प्रानस्त आप्याय तां चक्षुस्त आप्याय तां ॰ श्रोत्र तआप्याय तां यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्ते आ
प्याय तां निष्ठ्याय तात्शुध्य समनहा स्य शुद्धाय शुद्धत्राय स्वस्वधितमैन ० हिं ० सी ॥ सर्वोस
वनधूनकं ॥ कर्णकवायमाल ॥ ~ ॥ विहिपाप जवस ॥ उरुदथूस ॥ नायव
वस ॥ हवननेवद्धजा १ ॥ यजमानन सूर्यार्घ्य स्वानपूजालानथिय ॥ पूजारन्दी
ब्राह्मनकाय ॥ ब्राह्मन सूर्यार्घ्य ॥ न्यासादि ॥ अर्घ्यपात्रपूजा ॥ आत्मपूजनं ॥ ॥

उरुपूजा ॥ ॐ ब्रह्मनेनम २ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ विहि पूजा ॥ ॐ अस्तु मूर्तये २ ॥ ॐ विष्ण
यज्ञम ॥ नाय पूजा ॥ ॐ लक्ष्मी मूर्तये २ ॥ ॐ वं जविस्कन्द ॥ ॥ विहिस्राल ॥ ॐ
विष्णयज्ञम ॥ नायहाल ॥ ॐ वं जविस्कन्द ॥ स्वानपूजाराक शिवलं अर्घ्यपात्र
षवनघंष्ठाव जवनउरुनपूय ॥ वद ॥ छोमानि ॥ शिवनकि कुम्भयाहुव
नेत ॥ रत्नमय लिङ्गपूर्घ्यस्वाय्य ॥ ॐ नमः शम्भवाय ति मन्त्रेन पूजनं ॥ अर्द्ध
वानत ॥ ॥ शिवनकि कुम्भपूजा ॥ शिवलं खवस नकि वंजवस तयाथपू

जायाय ॥ न्यासादि आत्मपूजा ॥ ॐ शिवाय २ ॥ ॐ शिवानामासि ॥ ॐ नमस्मकय ॥
ॐ सहस्रशीर्षा ॥ ॐ अस्यजम्बिक ॥ ॐ श्रीश्चतलक्ष्मि ॥ ॐ जातवेदस ॥ अग्नयत ॥ ॐ
द्यौः शान्ति ॥ ॐ त्र्यम्बकं ॥ ॐ मनोजूति ॥ जाय स्तोत्र ॥ शुद्ध शान्त्यादि ॥ ज्ञोमन्त्र
मं ॥ शक्तिकुशगद्धव शिवक्षं शलिव अग्निकुण्डाय काव ॥ अथ निकौ नत ॥
दिग्विदिग्बन्धन सर्वार्घपूजायाय ॥ ॥ धनयज्ञ ॥ यजमान स्वर्यार्घ यात
वं ॥ ॐ अद्यादि ॥ यजमानस्य वृषोत्सर्गयज्ञ निमित्यार्थ वर्क्तु हव्याय अद्य

नमः ॥ मातान्धकारत्यादि ॥ पुष्पताजनं ॥ ततोवास्त जनकुशानुक कर्मकु
र्यात् ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमः ॥ गुरु समलनं ॥ मासाद्यन सूर्यार्घं कृत्वा ॥ प्राम्मू
लिवा ॥ गयत्रीन्यास ॥ ॐ कारदशकेन सामान्यार्घपात्रपूजनं ॥ तज्जलना
त्मानं शिंचयेत् ॥ तिलकं विधाय पूष्यस्त ॥ ततः पूजनं ॥ ॐ महोल्कन्दति ॥ ख
ड्गहस्तं वामहस्ते निधाय ॥ ॐ रुन्द्राय २ ॥ वज्रहस्ताय २ ॥ भूताधिपतये २ ॥
ॐ गणानां त्वेति गणपति वलिं ॥ ॐ नमो वन्नूमायति कैवलिं ॥ ॐ जातवेद

सति दूर्व्ववर्त्ति ॥ स्नात्र ॥ निर्म्माल्यादि ॥ अतगन्धादि ॥ ॐ वृजविस्कदति वाजावि
घयनं ॥ गायत्रीमन्त्रेन कूशनिरीक्षणं ॥ ॐ यद्द्वादवदनेति यविसमूहनं ॥
ॐ मानस्काकेति स्रुचलयेनं ॥ ॐ वावृकेति स्रुचलखनं ॥ ॐ नवायामीत्युद्धरणं ॥
x ॐ किवल्यगर्क्केति पीतचूर्ण्णेन पञ्चलिकोव ॥ ॐ वृजविस्कदति वाजा विरेचनं ॥
गायत्राद्धरणं ॥ ॐ उत्तरवेलदक्षि पूर्व दक्षिणन पश्चिम पश्चिमन मध्य ॥ अग्रया
त्यग्निमावषा पक्षिणगुरुवत्ता ॥ उत्तरवसामद्ववाना प्राजायविस्तु मध्यम ॥

अथ हविष्यस्तमीगर्क स्वयमवद्यतासन ॥ स्वाद्वादस्तुर्यं ब्रुत्वा गायत्री विन्य
सद्रूप ॥ ॐ सदसस्पतिति ब्रह्म पान्यप्रक्षयणं ॥ ॐ ब्रिकयनुमति ब्रिहिदि
क्षयणं ॥ ॐ देवसत्वेति कुशासनं ॥ ॐ तजासीति घृतासनं ॥ ॐ यूकानमनसति
वागीश्वरीपूजनं ॥ ॐ यक्षोहरणेति त्रिसूत्रीकृत्य वेष्टनं ॥ ॐ हिरण्यवर्णेति ल
क्ष्मीपूजनं ॥ ॐ वेदिवृतेति काष्ठपरणं ॥ ॐ हुम्ब्धानाहवाति काष्ठ निक्षाय ॥
ॐ प्रतवस्तेति काष्ठपूजनं ॥ ॐ अग्निमूर्द्धेति अग्निमानीय ॥ ॐ यक्षोहणेति

निस्तरणं ॥ ॐ अग्नये वायवे ति बलिपूजनं ॥ जवतिलाक्षतेन क्रव्यादं निर्धूनयेत् ॥
ॐ क्रव्यादमग्निं मिति क्रव्यादाग्निं संपरित्यज्य ॥ ॐ प्रस्थापनं । ॐ हुं स्वाहा त्यग्नि
मकरणं ॥ अग्नेस्तन्निवारकवचनावगुण्ठनं धेनुमुद्रामृतीकृत्य ततोऽग्निं मृडी
त्वा । मृतजात वैन्दवश्चाति चक्रीकृत्वानलत्रयं ॥ ॐ अग्निं त्रिनयनं क
रु त्रिपददक्षिणीकृत्य ॥ यजमानस्य पूर्वाभिमुखे अग्निस्थापनं सुमूर्ध्नि कर्म कुर्यात् ॥
ॐ मयि गृह्णामि त्यग्निस्थापनं ॥ ॐ स्वस्ति वाचयेत् ॥ ॐ समस्तानि तानि ... नन अग्नि

प्रज्वालय ॥ ॐ पृथिव्यादि विति अग्निपूजनं ॥ अग्निप्रज्वालनं ॥ ॐ ऋग्वेदाय छन्दमासनं नमः ॥
ॐ यजुर्वेदाय १ ॥ ॐ सामवेदाय १ ॥ ॐ अथर्ववेदाय १ ॥ अग्निमीळेति पूर्वकवाटनं ॥
ॐ इषेत्वेति दक्षिणकवाटनं ॥ ॐ अग्न आयाहि वीति पश्चिमकवाटनं ॥ ॐ शन्नो देवी
ति उत्तरकवाटनं ॥ पूजनं ॥ ॐ ऋग्वेदाय अत्रिसगोत्राय सोमदेवताय गायत्रीछ
न्दसे नमः ॥ ॐ यजुर्वेदाय भारद्वाजसगोत्राय रुद्रदेवताय त्रिष्टुप्छन्दसे नमः ॥
ॐ सामवेदाय काश्यपसगोत्राय विष्णुदेवताय जगतीछन्दसे नमः ॥ ॐ अथर्ववेदाय वै
तानसगोत्राय इन्द्रदेवताय अनुष्टुप्छन्दसे नमः ॥ ॥ ॐ इन्द्राय वज्रहस्ताय स

ना धिपतयनमः ॥ ॐ अग्नये शक्तिहस्ताय तेजाधिपतये २ ॥ ॐ यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिप
तये २ ॥ नैरृत्याय खड्गहस्ताय राक्षसाधिपतये २ ॥ ॐ वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये २ ॥
ॐ वायवे ध्वजहस्ताय पवनाधिपतये २ ॥ ॐ कुबेराय गदाहस्ताय यक्षाधिपतये २ ॥
ॐ ईशानाय त्रिशूलहस्ताय लोकाधिपतये २ ॥ ॐ विष्णवे चक्रहस्ताय पातालाधिपतये २ ॥
ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय स्वर्गाधिपतये २ ॥ ॐ स्वर्णश्रियै २ ॥ ॐ भूताय २ ॥ ॐ पातालाय २ ॥
ॐ नमः समस्त देवाय २ ॥ ॥ इन्द्रसमीपे अकडोकायन अर्कतूष्णीं कुड्कया ७ ॥ ॐ नर्षाद
दवति अग्निसंमुखीकरणं ॥ ब्रह्मासनं ॥ प्रणीतासनं ॥ प्रदवमात्मासनं ॥ ॐ इतिवेलासनं ॥

कुशस्यदत्तिन ब्रह्मासनं ॥ कुशालनप्रणितासनं ॥ ॐ देवस्य त्वेति कुशहरणं ॥ ॐ प्रत्युष्ट
०रक्षेति प्रणीतपात्रार्चनं ॥ ॐ अनिमितासीति संमार्जनं ॥ ॐ आयाहिष्ठेति आकाश
वाविनाप्रणीतपूरणं ॥ ब्रह्मापूजनं ॥ ॐ ब्रह्मणे २ ॥ ॐ प्रजापतयेनमः ॥ सर्वस्यादवस्या २ ॥
ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ प्रणीतपूजनं ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ वरुणाय २ ॥ अग्न्या २ ॥ अर्थापतये २ ॥ ॐ इ
दं विष्णु ॥ ॐ आ ब्रह्मन्नेति कुशदण्डेन ब्रह्मास्थापनं ॥ ॐ विष्णुर्व्वाटमसीति ॥ कु
शत्रयप्रणीतस्थापनं ॥ ब्रह्माप्रणीतपूर्व्वे पूजनं ॥ ॐ ब्रह्मनस्य नमि ब्रह्मापूजनं ॥
ॐ त्रीनिपदति प्रणीतपूजनं ॥ ॐ नमः कुशनीलग्रीवाति अग्निपूजनं ॥ ॐ वकयान

छिनति पवित्रकरनं ॥ यथास्थाविधिमन्त्रेन कलशस्क दिवार्छनं ॥ ततः र्थ्यवथासादनं ॥ पूर्ब्बे दक्षि
णे पूर्ब्बकाउनं उदकुम्भ पवित्र छेदनानि त्रीनि पवित्रानि प्राक्नीयात्र आज्यस्थाली चरुस्थाली
सम्मार्जनकुश उपयमनकुश समिध स्रुव आज्य तिल तन्दुल द्रव्य पूर्णपात्र उदूषल
मूशल शूर्प्प कृष्णाजिन आसादनं ॥ स्पृश ७ ॥ ॐ पवित्रेस्थेति आसादनं ॥ ॐ याज्ञेया मति
त्रिधाग्निज्वालनं ॥ ॐ पवित्रेस्थेति पवित्रछेदनं ॥ ॐ विष्णोर्म्मनसाटमसीति पवित्रबन्धनं ॥
प्रोक्षनीसंस्कारं ॥ प्रनीतव ७ ॥ ॐ आपोहिष्ठेति आज्ञिनापूरनं ॥ ॐ देविश्चापति त्रिया
प्लावनं ॥ ॐ पूषाणुष्ठ्वेति पूदिगलत्रयं ॥ ॐ सवितुष्टेति आसीचनं ॥ ॐ देवाय कर्म्म

णेति सर्ब्ववस्तु पवित्रीकरनं ॥ आसनस्थप्रोक्षनी निधाय ॥ अग्निप्रनीतमध्ये स्था
प्य ॥ आज्यस्थाली चरुस्थाली प्रतार्प्यनं ॥ प्रनीतव ७ ॥ ॐ महीनां पयोसीति आज्यस्था
ली आज्य निधाय ॥ उदूखल मूशल प्रतार्प्यनं ॥ प्रनीतव ७ ॥ ॐ धान्यमसीति तन्दुल
प्रक्षेपनं ॥ ॐ कूष्टास्तमिति कुटनं ॥ ॐ वेपरुषवृद्धमसिप्रतिष्ठाव षष्टदुष्टं वस्तु ॥ सूर्प्पमादि
ले ॥ ॐ परापूतं रक्षः ४ परापूता आरातयो पहतं रक्षो वायुर्व्वोविविनक्तु ॥ आस
वनं ॥ ॐ देवो वः सविता हिरण्यपानिप्रतिगृह्नातु अच्छिद्रेन पानिना ॥ द्वकागंदा
पचय ॥ चरुस्थाल्यां निधाय ॥ ॥ तां यार्चनीतण्डुल तण्डुलनिधाय ॥ ॥

पूषायूजनं ॥ ॐ नूवाय वायु द्दध्रा कामि ॥ ॐ पाष्कवा ङ्ख द्ध्रा कामि ॥ वनूगर्क्र निधा
य पाठली ॥ पूनघुनूक्काली पूजनं ॥ ॐ व्रक्म ८ तनम ॥ विष्कव २ ॥ सदा सिवाय २ ॥ प्रजा
पतयर ॥ ॐ कुष त्वति आप्य वनू आधि मयनं ॥ ॐ अपदताति ऊवद्यातिनं ॐ भ
नकृवर्त ॥ ॐ तप्याद समम ति ति प्रच्यूग्निकननं ॥ उदक शनं ॥ ॐ देवस्य त्वति कुव
स्पकर्तनं ॥ ॐ त्रा तानमी इति कुवयत पर्यनं ॥ ॐ क्रया मिति समार्ज्जनं ॥ ॐ कुष त्वति
अपाकुनं ॥ ॐ स वितुर्त्वति आज्या त्यलवनं ॥ ॐ ताजा मिति आज्य वर्तनं ॥ य वित्राक
त क्रितं ॥ आज्याद्धूनत मूकयत ॥ यावनीसंस्का यं पूर्व वट ॥ ॐ पवित्रस्था ॥ उदवी

नाया ॥ ॐ यूष्माऊन्द्रा ॥ ॐ अअत्वा यूर्त्ती प्रा कामि ॥ ॐ विष्कस्याखननि ॥ ॐ त्रषाकवति
अप्निप्रुद क्रिणक्रुवा ॥ ॐ अदित्यै यूद नमसि ति ८ वषाद कं प्रनीत निधाय ॥ सपवि
त्रव स्रुान स्वप्न ॥ प्राकनीदक्रि तत आज्यमूकन त४ ॥ कुव कुवार्जनं ॥ ॐ विष्क
वनम ॥ ॐ छुर्द विष्कू ॥ ॐ लक्ष्मी २ ॥ ॐ श्रीश्रु ग ॥ ॐ धूवसीति उपयमनकुश मादय ॥
अप्रेदन क्रिया ॥ ॐ कुतस्यया ति योनिकल्पनं ॥ ॐ गर्भ अस्या गर्भादानं ॥ ॐ क्रि
नत्यगर्भे पूंसवनं ॥ ॐ मिवानामासि ॥ सीमन्तोनयन ॥ ॐ यत्वयानी जात कर्म्म ॥
ॐ त्वम प्रघू क्रि४ सद्य हत तकनासनं ॥ ॐ कायस्वाहा नामकरनं ॥ ॐ तच्चक्षुर्देव

निष्क्रमनं ॥ ॐ याः कलिनी फलप्राशनं ॥ ॐ अन्नपते अन्नप्राशनं ॥ भूर्भुवदाचमय ॥
ॐ भूर्भुवः चूडाकर्म्म ॥ ॐ भद्रं कर्णेभि कर्णवेध ॥ ॐ व्रतं नदीभ्यो व्रतबन्धनं ॥ ॐ उ
दूकर्मं मखलाभावनं ॥ ॐ अग्न्यपत्नीः विकवकदवानामग्नी वृध । वदानव
सामयीनाय ॥ विवाह ॥ ॐ युञ्चके चतुर्थी ॥ ॐ विश्वतश्चक्षु जेमनजाप ॥
ॐ मनोज्योति प्रतिष्ठा ॥ ध्यान ॥ मषाद्वृद्धं स्वादि ॥ ॐ त्यग्निदग्नक्रिया ॥ ~ ॥ ॐ स
मिधाग्निं ति जुह्वादनत समिधमादाय ॥ ॐ तदवाग्निस्तदादित्य स्तद्वायुस्तदु चन्द्र
मा । तदेवशुक्रं तद्ब्रह्म ता आपः स प्रजापति स्वाहा ॥ षातन्तुमिधं ..याः ॥

तुकेडाँकावह । अर्के प्रनीतनिधाय ॥ त्रिसंवीर्यकुम्भन ॥ ब्रह्मासंस्पृत्वा ॥ ॐ मनप्र
जायतयस्वाहा ॥ इदमन वप्रजापतय त्याग ॥ ॐ धर्म्मा यवधृत ० वक्ति त्रिसंवी
र्यकुम्भन वह्नि त्रिवार्नमूर्द्धायं ॥ ॐ इन्द्रस्य वज्रो ऽसि वाज सास्त्वयायं वाज ० स ०
वाजस्य नूप्रसव मातरं महीम निति नामवद सा कनामह । यस्यामिदं विश्वभुवन
माविवश तस्यां नो देव ४ सविता धर्म्म साविष ॥ वामदक्षिन वन्धनं ॥ पूजनं ॥ ॐ इ
न्द्राय २ ॥ वरुणाय २ ॥ गनाधिपतय २ ॥ ॐ त्राता नमीन्द्रति जूह्वनं ॥ ततश्च प्रजाय
तियवतामान सं विल्य ॥ ब्रह्मा पनीत वदलोकयावाह्नं ॥ पूनरामसूदचन ॥

र्त्वनि ॥ कुअग्र पीतवृर्जुनमञ्जर्ल कानय ७ ॥ ॐ त्रियक्षअयनम ४॥ वृद्ध ४ पैवायश॥ द
वाघातयेश॥ दिव्याश॥ विदिमेश॥ स्वर्मयश॥ मत्यायश॥ योगालायश॥ गोथ्येश॥ धातश॥ स्व
न्यायश॥ सूर्यायश॥ यागीश्वनायश॥ त्रिकूक्ष्याश॥ यवस्याश॥ अमृषिण्या स्वाहा मधवनाय
श॥ सर्वयोदवस्यानम ४॥ अग्निनामक वर्त॥ ॐ भिवानामासीति। वलरुद्राग्नय
स्वाहा॥ ॐ इकन नमादवस्याश॥ दक्षिणत्रवक्ष दवनस्याश॥ ॐ ॐ नमो इन्द्राति उकना
घायर्ती॥ ॐ दमिन्द्रायस्वाहा॥ ननश्वद्वहाम॥ ॐ अग्नयस्वाहा॥ ॐ दमग्नय॥ ॐ सामा
यस्वाहा॥ ॐ दसामाय॥ ॐ वृक्षयक्ष अग्निसामास्यांस्वाहा॥ ॐ शुक्रायक्ष ॐ न्द्राग्निस्यां

स्वाहा॥ ॐ दमिन्द्राग्निस्यां॥ ॐ अग्ने जिह्वासीति जिह्वाहाम॥ किनक्षये स्वाहा॥ ॐ दं॥
कनकाये स्वाहा॥ ॐ दं॥ नकाये स्वाहा॥ ॐ दं॥ कृष्णाये स्वाहा॥ ॐ दं॥ सुप्रभाये स्वाहा॥
ॐ दं॥ अतिनकाथे स्वाहा॥ ॐ दं॥ मध॥ वद्धरूपाये स्वाहा॥ ॐ दं॥ ॐ सपतनअग्नि
सप जिह्वाहामं॥ पंचगव्यहाम॥ ॐ ॐ नावती॥ ॐ ॐ दंविष्णु॥ ॐ मानस्तोक॥ ॐ प्रजाय
तन॥ ॐ तवकृदहि॥ ॐ विनदवाना॥ ॐ तिर्यचगव्यहाम॥ तमायणाकृति॥ ॐ ॐ द
नतिस्वाहा॥ ॐ ॐ दनमध्व ७ स्वाहा॥ ॐ ॐ दश्रुतिस्वाहा॥ ॐ ॐ दस्यथति स्वाहा॥ ॐ उय
मर्जे धन्वत्माशो धन्वत्माभाग मं धयत स्वाहा॥ ॐ वायस्याव मसूर्यास्तु दीधवायस्वाहा

चतुर्थ्यान्ते धनघृताहुति ॥ ॐ तिलाहुति ॥ त्रिपञ्चाहुति ॥ ॐ भू०० ॥ इदं भू ४ ॥ ॐ भुव०० ॥
इदं भुव ४ ॥ ॐ स्व ४०० ॥ इदं स्व ४ ॐ भूर्भुव ४ स्व ४०० ॥ इदं भूर्भुव ४ स्व ४ ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने ॥ इ
दमग्निवरुणाभ्यां ॥ ॐ सत्वन्नो अग्ने ॥ इदमग्निवरुणाभ्यां ॥ ॐ अयाश्चाग्ने ॥ इदं मग्नयाश्च
ग्नेः ॥ ॐ ये ते शतं वरुण ॥ इदं वरुणायादित्याय म वित्राय विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य ४
स्वर्केभ्य ४ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण ॥ इदं वरुणायादित्याय ॥ ततो ॥ वेदाहुति ॥ ॐ ऋग्वेदा
य स्वाहा ॥ इदं ऋग्वेदाय ॥ ॐ पृथिव्यै०० ॥ इदं ॥ ॐ अग्नये०० ॥ इदं ॥ यजुर्वेदाय०० ॥ इदं
ॐ अन्तरिक्षाय०० ॥ इदं ॥ ॐ वायवे०० ॥ इदं ॥ ॐ सामवेदाय०० ॥ इदं ॥ ॐ दिवे०० ॥ इदं

ॐ सूर्याय०० ॥ इदं ॥ ॐ अथर्ववेदाय०० ॥ इदं ॥ ॐ दिग्भ्य ४०० ॥ इदं ॥ ॐ चन्द्रमसे स्वाहा ॥
इदं ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ इदं ॥ ॐ छन्दोभ्य ४०० ॥ इदं ॥ ॐ प्रजापतये०० ॥ इदं ॥ ॐ देव
भ्य ४०० ॥ इदं ॥ ॐ ऋषिभ्य ४०० ॥ इदं ॥ ॐ श्रद्धायै०० ॥ इदं ॥ ॐ मेधायै०० ॥ इदं ॥ ॐ सदस
स्पतये०० ॥ इदं ॥ ॐ अनुमतये०० ॥ इदं ॥ इति वेदाहुति ॥ लाजाहुति ॥ वाजादेव
यजमान कुलस्य कुल मत गुरु मन्त्र घृताहुतिं दद्यात् ॥ गायत्री मन्त्रेणास्तावन्ना
घृताहुतिं कुर्यात् ॥ ॐ कामं कामदुघे इत्यादि ॥ संश्रव घृत प्रणीतानि क्षेय ॥ पूर्णादद्वि
ति घृताहुति पूर्णा ॥ ततो व्रीहि पात्रसाधनं ॥ प्रणीता ॥ तिल जव तण्डुल यज्ञ सूतानि

ॐ हृदय दयका ज्ञानसा यवल भाय स्नानमात्र कथन ॥ ध्वन लि मापूजा
क्रिय चाग्नि वस्तु कलस मिध कमाला दूर्वापुष्प सक्रिन वृहियात निधाय ॥ हृदयादि मन्त्र
न सीहृ ॥ भय त्रिमन्त्र जपय ॥ ॐ ह्रतत हवि उडमानादि किर्नम च्यावँ कारयत ॥ जज
मान लबो क्रियात आचार्य दद्यात ॥ आचार्यन भयबीज पत ॥ अग्नि संकल्प दद्यात ॥
गणपति दुर्गा ब्रह्मा पुलात वदलाक याल कलश कुण्डल त्रिदेवता स्वस्वमन्त्र नङ
दुयात ॥ पूर्णी ॥ यथायथा कर्म साङ्गपूजायाय ॥ चव किचायाव ॥ निर्मञ्छन वलि सिं
चर्न ॥ मे तर्ह ॥ नाडचानद्धाय ॥ छुछाय ॥ द्रव्याय ॥ स्नान्याचक ॥ वस्तुघण्ट उदाक्षि ॥
कलि निर्मलान छाय ॥ चन सिंन्दुन यज्ञापवीत स्थान सगुन विय ॥ सायाजवस त्रि

शूल बवसवव्र वाय ॥ लकयास ॥ वतक्रिजाप्ता वसा त्रितत्वन साधनं ॥ ॐ ह्व ४००
ॐ त्र्यंबक यज्ञाने ॥ ॐ नुव ४०० ॥ ॐ ह्स्द विष्णू ॥ ॐ स्व ४०० ॥ ॐ नमः भक्तवाय ॥ वंदावन क्षय
भाखा सचनू विय सायार्गी ॥ जजमानपू षाद्धायक ॥ मन्त्र ॥ ॐ पूषा भवाप्त खउ न पू
षायषन्तु सर्वं नपूषावाज० सीनाम वउन स्वाहा ॥ ॐ अग्न्यष्ट छिकृताय स्वाहा ॥
दक्षिणा क्रिमूख्व न ऋत्वर्मार्चार्य ॥ तताना क्रिलंघन मन्त्र ॥ ॐ सदामिनर स्वानानुसैङ्गु
मेयाक्षन सि मावाहि स्वाहा मानूतातिमनूताक्ष नं ४ सेनूमेया हनतिनावाहि स्वाहा ॥
वस नमिद्व थांङ्कृत्व मेयाहन तिमावाहि स्वाहा ॥ मानू तातिमनूताक्षन नठ मन्त्र मं
दे ३ म ३

याक्षेत्र सिमा पाद्दिस्वाहा ॥ वक्षेत्र सिवक्षेत्र सियाक्ष ॐ ब्रह्मयावाद वानरर्व नाथ द्रिया
वाबु स्नात्वयू ४ ॥ ॐ नवायामि ॥ षठवलि विय ॥ ॐ यास्मनू द पूर्वतसनाय ४ नषवलिस्का
स्य ४ स्नानमानम ४ ॥१॥ यास्मनूद दक्षिण ४ सनाय ४ नषवलिस्का स्य ४ स्नानमानम ४ ॥२॥
यास्मनूद पश्चिमत ४ सनाय ४ नषवलिस्का स्य ४ स्नानमानम ४ ॥३॥ यास्मनूद उत्तरत ४
सनाय ४ नषवलिस्का स्य ४ स्नानमानम ४ ॥४॥ यास्मनूद यलिस्का सनाय ४ नषवलिस्का
स्य ४ स्नानमानम ४ ॥५॥ यास्मनूद धस्का सनाय ४ नषवलिस्का स्य ४ स्नानमानम ४ ॥६॥

हविकाम ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ नूद्राय ०० ॥ सर्वाय ०० ॥ पशुपतये ०० ॥ गणपतये ०० ॥ उग्रा
य ०० ॥ महादेवाय ०० ॥ महादेवाय ०० ॥ ह्रीं भीमाय ०० ॥ ॥ सायाक्रियाघन जासावयाक्वत
चसलखनयाव त्वयथ्वाव हाय ॥ ॐ इन्द्र स्वर्ग धर्म स्वाहा ॥ स्वर्गे कि स्वाहा ॥ स्वर्गे
सूर्य स्वाहा ॥ स्वर्गे ... स्वाहा ॥ स्वर्ग सूर्य स्वाहा ॥ सायानंदकिना विय ॥ थांलि क्वकल
गन सा जू लिषक विय ॥ धूपदीप सन्हूनथि प्रतिष्ठा ॥ सा या स्तुत्र ॥ ॐ ब्रह्मादि
लोकपालाः धर्म यत्र ध्याय प्रकीर्तितः ॥ त्वामिनमर्हे रक्षा समानकाउ सर्वदा ॥ ॐ यें द्वार
महाघोर घोरवैतरणी नदी । तं तर्तुकामः प्रयच्छन्तु प्रेतमादिदिवंगत ॥ जूत्रगन्धादि ॥

१ विष्णु यादीकाशी धूहरः॥ श्री यमानाहित्यः॥ कवः॥ सकनकनाविष्णु याः॥ ॐ धा कमसे कवः॥ कवः॥

साहिसत॥ ॐ गतयाउन विष्णोः महायाना महानदी। नर्उकाम प्र यद्धनि प्रत

मोक्षदिवं गतः॥ यावज्जमाव लोमसंख्या तव वर्ष स्वर्गलोक संप्रापकामनया ॥

थन ॐ मर्वितनदी लंघनार्थं स्वर्गलोक संप्राप करावत॥ ॐ गंधादि॥ इति साधूजा॥

॥ यजमान साधनं॥ पितृवन॥ ततः॥ यथावत् थन॥ ॐ अद्यादि सूर्यार्घ॥ माहा

ध कायत्यादि॥ ॐ विष्णुरद्यादवस्या ॐ पूर्ववेश्वानवदवस्याः इदमासनं नमः॥ पूर्ववत्२॥

विष्णुरद्यादव त्यादि॥ यजमानस्य यथा ऽदम, शातंपितृ कवन ॐ पादार्घं नमः॥

काश्यप गोत्र यजमानस्य यथानाम्न वि तिलोदक इदमासनं स्वधा॥ पितामह प्र

१ध्ववद्य पहुन ता सिजवप्रजायोय थन॥ पितामह२

पितामह वृद्धप्रपितामह पूर्ववत् स्वधा॥ थन वाय॥ काश्यपस्य गोत्रत्यादि पित

महयथानाम्न तिलकुशयादार्घं स्वधा॥ एवं प्रपितामह वृद्धप्रपितामह॥ काश्यपस्य

गोत्र यथानाम्न इदमासन पूर्व पादार्घं उप तिष्ठता॥ ॥ यजमान यादप्रक्षाल्य॥

अर्द्धह मिंगवा॥ यजमान नासिचक॥ विष्णुदयादि आचमनीयं॥ विष्णुस्याः त्यादि

इदमासनं १॥ पूर्ववत्२॥ एवं पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामह इदमासनं स्वधा

पूर्व स्वधा॥ यथानाम्न इदमासन पूर्व मूय तिष्ठता॥ वंसावक यजमान॥ कुशहस्तन

उसवनमादवस्य॥ उव धवतीस ध्याय॥ यमानका कवाउम॥ ध्यकूमयाहामवचा॥

दक्षिणेनस्वधा पितृभ्य४ ॥ स्वव धवती सथ्याय ॥ जमानस्ताक वातुम ॥ थतसायक ॥ न्यास
यावक ॥ ॐ गदाधरायत्यादि ॥ नाहात्यर्घ पूजा ॥ कुशपुंतुलिनदुयावक ॥ कुशनयानाक
ष्ठपसन ॥ ॐ ब्रह्मानम ॥ वकुलायर ॥ जूपयितयेर ॥ गजाथेडनत्यादि ॥ जूठकुनिनलं
घ सर्वयाल पिंका याव नासकूय ॥ ॐ ब्रह्मणेन२ ॥ विष्णवश ॥ सदाशिवायर ॥ यजमान
ज्ञातन सिंचनं नर्वं चंदन पुष्प ॥ ॥ पूजाकोदाल लानथियक ॥ ॐ सफग्याक्षत्या
दि ॥ स्थानवंतन ॥ गयायर ॥ गदाधरायर ॥ पुण्डुलीकायर ॥ कुशलघनकाय ॥ ॐ
जूपवित्रत्यादि ॥ मनं सलं घटकूय ॥ सवाक्षार्य तनगुचि ॥ नर्वं ब्राह्मनस्के ॥ ॥ यस

याव स्थानसं दिलानथिसंत ॥ ॐ ब्रह्मादि ॥ काश्यपस्य गोत्र त्यादि ॥ कर्दुसं त्रिया
दशकालड्य दुमिगनीन ब्राह्मनानसं संनिधानमकु ॥ पितामह प्रपितामह वृ
प्र द्धपितामह सर्वसंनिधानमकु विश्वेदेवादि पूर्वकं यूष्मान्संथ्यामहेक निध्य ॥ ॐ कुनू
ष ॥ ॐ कासंयेर ॥ कान्कायर ॥ ब्राह्मनस्के ॥ ॐ ब्रह्मव सत्याथेर ॥ एकादश रुद्र स्योर ॥
द्वादश आदित्यस्योर ॥ पितामहप्रपितामह वृद्धप्रपितामह स्य४ पूर्वसंस्वधा ॥ ~ ॥
तत४ पात्रसाधनं ॥ विश्वेदेव पात्र० दमासनर ॥ नवंजूयग्रथे श्कोनर ॥ तिजलबा
लानग्वठ काधासंत ॥ जूपवित्रति पात्रास्कर्त ॥ विश्वेदेव पात्रउत्थानं ॥ नवं

वैश्वानर ॥ विश्वेदेव पात्रय पवित्रकं २ ॥ ॐवं वैश्वानर ॥ तंस्वत ॥ विश्वेदेव छन्दमाय १ ॥
ॐवं वैश्वानर ॥ ॐवं छन्दमकनं ॥ ॐवं चन्दनं ॥ ॐवं पुष्पं ॥ धूप ॥ तंस्वकृ अमृतका
याव विश्वेद्यादेवस्य ४ यजमानस्य पितृन्दमं ओतमपितृ मपितृ कवंत श्राद्ध
प्रसार्घ पात्र पनिपूजनं ॥ तथैव वैश्वानर ॥ ९ ॥ विश्वेदेवाह्वन मण्डल स्वानदेवा
वायक ॥ तंस्वकृ अमृतं दाव विश्वेदेवत्यादि छन्दमावाहिष्यडाक्ता वाह्य ॥
आगच्छन्तु महाभाग विश्वेदेवा महाबला । ये यत्र विहिता श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ॥
॥ ९ ॥ विश्वेदेव पात्राति ज्रुष्टिसन्तु ॥ ॐवं वैश्वानर ॥ विश्वेदेव पात्र उत्थानं ॥

विश्वेदेव पात्र पूज्यं २ ॥ विश्वेदेव पात्र आलादनं विश्वेदेव पात्र पवित्रकं २ ॥
विश्वेदेवस्या यजमानस्यादि हस्तार्घ स्वधा प्रत्यर्घ ॥ तथैव वैश्वानर देव पात्र ॥
पात्रोदकेन आत्मा सिंचयत् ॥ विश्वेदेव वैश्वानर देव पात्र स्थान मासि ॥ ॥ काश्य
पस्य गोत्र यजमानस्य पितृन्दं अमावास्यान पितृस्यादि पितामहस्य आसनं स्वधा ॥
ॐवं प्रपितामह वृद्ध प्रपितामह ॥ अयं विरागि अर्घ्य कर्ता ॥ पितामहस्य पात्र उत्थानं ॥
ॐवं ३ ॥ पितामहस्य पात्र पवित्रकं स्वधा ॥ ॐवं ३ ॥ पितामहस्य पात्र छन्दमाय ४ ॥ ३ ॥ पिताम
हस्य पात्र तिलमिदं ॥ ॐवं ३ ॥ पितामहस्य पात्र चंदनं ॥ ॐवं ३ ॥ पुष्प धूप ॥ काश्यपस्य स्या

दि यजमानस्य पितृन् दर्भपात्रम् पितृभ्यो त्यादि अर्घपात्र पवित्रक्षं ॥ एवं ३ ॥ ब्राह्म
नस्कन्धन मण्डलयाय ॥ यजमानन थ्वकुशहा मलर्लक्ष्य दाव ब्राह्मण सलाहा धर्म
दाव ॥ काश्यपस्येत्यादि ॐ दमा या हि व्यर्थ अओं वाहय ॥ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा
योगिभ्य एव नमः । स्वाहायै च स्वधायै च नित्यमेव नमो नमः ॥ मण्डलसते ॥ स्वानती न ॥
पितामहपात्राणि ब्राह्मण निसंदु ॥ एवं ३ ॥ ~ ॥ प्रतपात्र साधनं । पितृश्रम पात्र
ॐ दमासनमूयतिष्ठ ताः ॥ पूर्ववद्विधिन अर्घपात्र पवित्रक्ष पर्यन्तं ॥ स्वानती
पितृश्रम पात्राणि पितामहपात्र तिसकु ॥ एवं प्रपितामह वृद्धप्रपितामह ॥

धनसमानस्य ॥ काश्यपस्येत्यादि पितृर्यथानाम्न पितामह अमुय समानगोत्रस्य
सीद ॥ एवं प्रपितामह वृद्धप्रपितामह ॥ ~ ॥ पितामहपात्र उत्थानं ॥ पितामहपात्र
पूर्ण्यं स्वधा ॥ पितामहपात्र जलातनं ॥ पितामहपात्र पवित्रकं स्वधा ॥ काश्यपस्येत्यादि
हस्तार्घं स्वधा ॥ एवं ३ ॥ पात्रादकेन अमुख रुतं ॥ पितामह ३ ह्ल नमस्ते ॥ ~ ॥ विलेप
[illegible] गन्धनं १ ॥ यज्ञोपवीत पुष्प फल ताजनं २ ॥ पिता
महवन्दन स्वधा एवं ३ ॥ यज्ञोपवीत पुष्प आच्छादनं ॥ विलेपस्य [illegible] काश्यपस्य
त्यादि धूपदीपं स्वधा ॥ अमृतगन्धादि ॥ ॐ दत्त्वाति मत्यसाचक ॥ स्वानती [illegible]

यच्छत सूर्यो ह्याति॥ मतसिवाह्मनस्वा लंछिउनूय॥ विश्वेदेवादि यजमानस्य त्यादि
यथादीयमानमिदमन्नसंकल्पसिद्धिरस्तु॥ कामोयस्यत्यादि यथादास्यमान्नमिदमन्नसं
कल्पसिद्धिरस्तु॥ सर्वविधिपरिपूर्णमस्तु कालातीतवेलातीतनिर्दोषमस्तु॥ यस्या
दिछन्कस्यजूवीयमस्तु स्वधा॥ जूतुगन्धादि॥ लंछिउनूय॥ जून संकल्पजू छिद्र
मस्तु॥ जुननपूय॥ जूया ध्यामथनामा या कोलीबीचीजूवनिकायूनदोनावतीस्
यासफेनामू किदायका॥ ~॥ पितामह पितृतिलादकयजुमसनंस्वधा॥ उर्वेशु॥ विसन
पितृसनमूयतिष्ठन्ता॥ पितृप्रपितामहपितृआसनेडयतिष्ठन्ता॥ पितृयात्रासनंच॥ धूजुमला

य॥ यूवीसफयविश्राति श्राद्धकालयूमाचितस॥ लिफो दुमोडलदको॥ पितृनंदकस्य
यँ॥ कोतावसपितृकजूदिवंसकलतावूत॥ वैसाम्यं कामनायाद्भडाया॥ लानधिर्यं
त॥ जून जूम्बूजुमाम्रालि श्रीवसर्पिःसतजुल॥ दधिमधुतिलसंयुक्तं जूयाम्पि
तृसस्तुव॥ यजमाननक्षाय॥ पितृ मृहंकवि थ्य॥ ब्राह्मणर्य डोकूनूष॥ ॥ पुनपि
तृयोनंत॥ ॥ विसनपितृ भोत विदावह्नीदत॥ जूडावदनकथवाला यचगहविं
नाशिता॥ तवा पितृमयादत्त मदीयमूयतिष्ठन्ता॥ पितृवंशमृतायच मातृवंश
तथैवच॥ गुरुश्वसुरबंधूनां यचान्यवान्धवास्मृता॥ यमकूललूक पितृगु पूय

दावविवर्द्धिता४ क्रियालायगताप्येव जायन्थर्पगवस्तथ ॥ विकृयाआमगर्भाव
ह्मातात्मात कुलमम । तथापिपितृ मयादत्तं मवीयमूयतिष्ठतां ॥ सं... दीनवालवि
गवपितृ ... यन्तता पितृ मूयतिष्ठतां ॥ विगवपितृति ... कार्घमूयतिष्ठतां ॥ च
न्दन पुष्प फल ... धूपदीप ॥ पितृनूदं ... त्यादि ॥ विगवपितृ ... य४फलपुष्प
ताम्बूल धूपदीप नैवेद्यादि संकल्प सिद्धिरस्तु मूयतिष्ठतां ॥ स्वानतन ॥ विगवदान
यत्थोक फलसंप्राप्तमस्तु । विगनाम... पीतावन्दवत्तु ॥ ... यजीवा
थयपदअ४ जलमम । ... नत्यस्तु ... पर्नागति४ ॥ ... ॥

उयस्यर्णनं ॥ पितृपात्रजलस्यफर्णं ॥ पितार्मपितृराग ॥ जवंदू ॥ यथाराग ॥ पितृ
जाइत ॥ ॐ अद्यादि काश्यप गोत्र्यादि जनक पितृ तस्मै स्वधा ॥ पितामह पितृ
जयवर्धन्यर्थ ॥ जवं अद्यादि वाहिकदू ॥ पितामह पितृराग ॥ जवंदू ॥ यथारा
ग ॥ काश्यपगोत्र्यादि पितामह पितृ तिलादकार्घ स्वधा ॥ जवंदू ॥ अक्षावस्तु
यक ॥ चन्दन यज्ञोपवीत विगवयार्तं ॥ पुष्प३फ ... जनदू ॥ धूपदीप ॥ का
श्यपगोत्र्यादि पितृ ... यफलपुष्प ताम्बूल धूपदीप नैवेद्यादि संकल्प सिद्धि
रस्तु स्वधा ॥ जवंदू ॥ हुवनमण्डलयाय ॥ ॐ अद्यादि काश्यपगोत्र्यादि पि

ल्दानार्थमं पितृप्रदान यथ्थोक फलं संप्राप्तमस्तु । गयपूखान माहात्म्य यथ्था
कं फलं संप्राप्तमस्तु ॥ दानानन्त काल जूद्धि द्रमस्तु क्रियायनिपूर्णमस्तु ॥ काला
तीत वेला तिन निर्दोषमस्तु । यस्यादिष्टं तस्य जन्मीयमस्तु स्वधा ॥ जूतगन्धादि ॥
॥ ॥ पितृ पुत्र पितृ प्रेत विष्णावर्जाहृत ॥ ॐ जूद्धादि काश्यपस्य त्यादि ज्ञातक
प्रेत पितृ मूय तिष्ठतां ॥ प्रेत पितृ यथवंशे धर्षे ॥ काश्यत्यादि प्रेत पितृति
पादकार्घ मूय ति ष्ठतां ॥ जूद्धावसूद्धाय ॥ चन्दन यज्ञोपवीत पूष्य फलद
ञन धूपदीप ॥ काश्यपस्य त्यादि प्रेत पितृ हृदयफल पूष्य ताम्बूल त्यादि ॥

हृवनमस्तु लयाय ॥ ॐ जूद्धादि काश्यपस्य त्यादि पितृदानार्थ नत्यादि ॥ स्मातृ ॥
प्रेत पितृ मम रवान्नं पञ्चामृत नयूचित । गृह्णन्तु प्रेत तूयन पितृ ष्ठवनमा
स्तुत ॥ जूतगन्धादि ॥ ॥ स्वानतन्नेश्च ॥ पितृ पितृ जोनि पितामह पितृ जादि संस्तु ॥
नुर्यत ॥ समान ह्वाय ॥ वाक्य ॥ इह लोके पवित्र तस्य ४ गता सियनमाश्नति । नरकं
च यादि तस्य ४ दिव्य लोके स गच्छति ॥ काश्यप गोत्र पितामह यथ नाम पितुर्यथा
नाम समान गन्तुं युत्संद ॥ ॥ उमवानूगत पुत पितरवर्द्ध वदामिव । शिवमस्तु
तिसेषानामू जाय कांक्षि तजीवीन ४ ॥ काश्यपस्य त्यादि ॥ ॥ स्वानफल ताउनस्वरि

नेद्धियक॥ ॥स्वाद॥ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥१॥ पिंरवकुवेन
व मयादकेन रहतल। काश्यप गोत्र पितरऽथ नाम्न पितामह यथानाम्न प्रपिता
मह यथानाम्न पितृशाद्ध ... द्यादि॥ अूत्र गन्धादि॥ मङ्गल विसर्जन॥ ॥ लक्ष्व ईसाय
उं स्वधाकारमस्तु॥ दीर्घमायूरस्तु॥ शिवा आप सन्तु॥ ॥ लक्ष्व र्व सा ल॥ स्वधाकारमस्तु॥
दीर्घमायूरस्तु॥ शिवा आय ४ सन्तु॥ विश्वदेव वाक्य न स्कन्द द्यावितु पूष्पं दद्या॰॥ उं ल
क्ष्मी वसति पूष्पेषू लक्ष्मी वसति पूस्कल। लक्ष्मी वसति गोसदा गोष्ठ सौमनस्यं दद्यात्सु मे॥
अक्षतं चास्तु मयूर्ण्यं शान्ति पूष्टि धृतिश्च मे। यच्छ्रेय यस्यार्थं लोके गच्छदस्तु सदाम

म॥ सौमनस्य अस्त्वक्षतं चारिष्टं चास्तु॥३॥ विश्वेदेवानां ध्यान देवानां दत्त मन्न मुदक
मक्षीयमस्तु॥ पितृ पितामह प्रपितामहदत्त मन्न मूदक मक्षीयमस्तु॥ पितृस्थानन
न॥ यासाम् द्वि ... मन्न मूदकमक्षीयमस्तु॥ अघोरा पितर पितामह प्रपितामह
सन्तु॥ वंशास्य स्थान गन्न के॥ अस्म॰ गोत्रा वर्द्धतां समवर्द्धतामायूवा वाक्य॰ श्री वर्द्ध
लक्ष्मी जनधन संततिसंतानवृद्धिरस्तु॥ यमास्य थवस्वदन लक्षदाय॥ उं दाता
रो नाभिवर्द्धतां वेदाः संततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगम॰ बहुदेयं च नोस्तु ३॥ अन्नं
च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन॥४॥

उत्तानवाशिचसंपु छियदानविधुम्यदाना ॥ थलसँघनपिण्डस्त्य ॥ मालिकेँव ॥ थमस्त
य ॥ पूछिरेविधुम ॥ हस्तार्घस वियाकूल विश्वेदेवया रु. हावाचायिष्ठवाच्यतां ॥
पितृया स्वधावाचयिष्यवाच्यतां ॥ पितृ पिण्ड स्वधाच्यतां ॥ ३ ॥ पिण्डयाद्वन लेप
यसाल ॥ पीयनकोतस्य ४ स्वधा ॥ लीसाल ॥ जूनु स्वधा ॥ कामाल सीर्खंगावस्वक
लूय ॥ काश्यपस्य त्यादि पितृ पिण्डजूको तफि ३ ॥ ॥ उत्थानयात्र कृत्वा यथ
शक्तिदक्षिनादानं ॥ विश्वेदेव पिण्डस ब्राह्मणस्के पिण्डदानप्रतिष्ठार्थं यथाश्र
द्धदक्षिनानु स्यम हिंसंप्रदक्त ॥ जूत्रगन्धादि ॥ स्वानतन ॥ वाचनं ॥ ॐ । स्वस्ति र

वन्ता कुर्तास्वस्ति ॥ थलखपिण्ड सतूय ॥ पितृ पिण्डजूक्रीयतफि ॥ ३ ॥ ततागवार्ड
नं ॥ वँसोयाव ॥ कपिलादिपञ्चगोमातृका स्य ॐ देमासनं २ ॥ आवाहन ॥ नन्दाद्ये
जूर्घ २ ॥ ३ ॥ चंदन यज्ञोपवीत पूष्प फल धूपदीप नैवेद्य ॥ कपिलादि पञ्चगोमातृ
कास्य ४ फलपूष्प ताम्बूल धूपदीप नैवेद्यादि संकल्प सिद्धिरस्तु ॥ मङ्गलस्तोत्र ॥ ॐ
गव नमस्तु ॥ वन्दितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण जह्नुना । कपिलहरमपायं ज
न्मयादृष्कृतं कृतं ॥ गावामग्रतो नित्यं गावः पृष्ठे दक्षिणे । गावो मे हृदये
चापि गवां मध्ये वसाम्यहं ॥ गौव त्रय जगन्माता देवानाममृतप्रदा । ॐ देवास

ग्रहाणित्वं ॐ इदं सवगसकृतं ॥ अद्यगन्धादि ॥ ॥ विश्वेदेव प्रार्तसवांपोलखिनय
जमानात्रियक ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ चन्दनअसिर्द्धदि ॥ सूर्यार्घ्यस्नानतनि ॥ कृतकर्मात श्रीसूर्या
य अर्घ्यन्नम ॥ स्नानतंभा ॐ इदं देवतायपूर्व्यं ३ ॥ जातीपुष्पंह्रय ॥ ॥ पितापितामह्या गा २
दि ॥ पितयावसवाद्भ्याः ४ कूड्रेक्वेव पितामहा प्रपितामहास्तथादित्या ॐ ब्धनेवखि
कास्मृता ४ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं रक्तिहीनं तथैवच । तत्सर्वं संपूर्णं नमभापि
हृदेवता ॥ अद्यगन्धादि ॥ शिवलोक विष्णुलोक सब्राप्ताकमस्तु ॥ कर्त्तजजमानदीर्घमायु
रस्तु ॥ पितृउद्धपयाति ॥ उद्धायथस्व ॥ विश्वेदेव वैश्वानरदेवयर्हूर्सनिधानमस्तु ॥

कपिलादिपस्त्र मेमाहृक्षयअकिगम्यतां ॥ पितृध्याय ॥ ॐ सफक्ष्याधनस्याचि ॥
गयायां पितृर्भूपन स्वयमेवं जनार्द्दनं । तद्दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते सत्त्वणत्रयं ॥
समीपव्रमानेन पितृदत्त्वागयाशिर । उद्धवसफमाशान अर्भकालेनगत ॥
फल्गुतीर्थनव ४ स्नात्वा हृष्ट्वा देवंगदाधरं । आत्मानं तारयिष्यन्ति दशपूर्वाद
शमयनान् ॥ हामलकृतलयकाकायावलावाय ॥ यचास्म७ जलजाता अपूर्त्तायच
बान्धवा । तर्षां हृस्तादकमेसाया मत्रीयम् पतिष्ठता ॥ लयतनपूय ॥ कातर्यनं ॥
धनसायार्ज्ञदक्षि यातकूहाव मेमयलिङ्गसतंसाह्रय ॥ पितृप्रदक्षिणयाय ॥ ३ ॥

आयुः प्रज्ञा धनं विद्या स्वर्गं मोक्षं सुखानि च । प्रयच्छन्ति तथा राज्यं नृणां यच
पितामहान् ॥ आयुर्वृद्धिर्यादि ॥ नान्दीश्राद्धकापूय ॥ सूर्यस्य स्नानतनं ॥ ब्राह्मण
विस्नानतनं ॥ पितृविसर्जनवासन ॥ ~ ॥ ततः कुशण्डिका यादमापातनमालका
क्रिय ॥ स्नानलिका वतलाव यजमानस्य सकलदिन स्नानतन का ॥ कुशायानेविय
क ॥ मा न्याकृति ॥ ॐ ह्रीः मान्ति ॥ पृथिवीकाकृति ॥ ॐ त्र्यम्बकमिति ॥ ॥ ब्रीहिहोम ॥ य
व धान्य लाजा समिध पायस दधि चन्दन जाम्बीर श्रीफल नालीकेल गुडा चन्दन
वदनि औषधी भेषज लूयकशव यम्भकमल सुमुख गतपुष्प प्रियंगु गुगुल

चन्दन कुंकुम खान्द श्रृन फल ताम्बूल यवान दूर्वाकत दुग्ध मिश्रहोमयत ॥
वलिप्रदानं ॥ ॐ गनानांत्वा ॥ ॐ जम्बजम्बिका ॥ ॐ घृतं घृतपावान ॥ ॐ आनानियुक्तिः ॥
ॐ उकायिवतम ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुत ॥ ॐ नमोवसुसाय ॥ ॐ जुसंख्याता ॥ दिक्पतिपूजनं ॥ ॥
ब्राह्मणपूजनं ॥ दीपवृद्धिकाहोमं ॥ महाव्याहृतिमन्त्रेन दीपवृद्धिको होमं कुर्यात् ॥
॥ ॥ ततः प्रायश्चित्तहोमं ॥ आज्येन ॥ पंचवारुण त्यागपूर्वक ॥ उपयमनकुशा
ग्र ॥ वतुयाहि ॥ ॐ याहिनाजुनूननमः ०० ॥ याहिनाविश्ववदमः ०० ॥ यस्तूयाहिवि
लावसं ०० ॥ सर्वयाहिनातकनी ०० ॥ ॐ युनक्तु ज्ञानि वर्कं ०० ॥ देवकृतस्यैनसा

कौ कौथाया नाथाया ... कौ कौ जाउ आथम कवाया कौथा कथया ... था या कौयाघु
कौयारा कौथास
याथौ कौरयाथायानायाकौ कौ कौ ताम सं साकाथा थ था था नि मि नि न म सायि ...

ॐ नामरुद्राय। ॐ विश्वाय एं ... सं भ ... कालन ॐ नामरु...

3528

१३० १३०
रुद्रयापिण्डथे
विधि कुशण्डिकासं
रुद्रविधि 3528

वयउँनमसि०० ॥ मनुष्यकृतस्यैनकृत ॥ आत्मकृत ॥ एनस एनसावयउँनमसि
०० ॥ ॐ यद्वाहमनाविद्वांश्चकारयद्वाविद्वांसः स्यैनसोवयउँनमसि०० ॥ ॥
ॐ नूयत्सु४०० ॥ नूनातिविकीडहामि०० ॥ आतिविकीडहाति०० ॥ आनाङ्गा नयदाङ्गा
नी तत्सर्वं अग्नीयतसर्वं गदस्नोकल्पयतिविदितानियथाकिन४ स्वाहा ॥ ॥ वह्निग्र
यती ॥ ॐ वैश्वानरायविश्वहृ आननकाङ्क्षितायधीमहितन्नोवह्नि४ प्रचोदयात्७ स्वा
हा ॥ घृतानुमान्याहुति ॥ बलिहरणं ॥ ब्राह्मणदक्षिणादानं ॥ संश्रवप्राशनं ॥ उद
कार्द्जनं ॥ ॐ सुमित्रियानति प्रणीतारिषकं ॥ ॐ आपाआपोह्मान्चवो विष०वमनम्र

मणुक्षमे४ ॥ ययस्थानगृआगन्मास०म्र चवर्द्ध४ भ्रयुज्जयावधननव ॥ पवित्रमा
चनं ॥ ब्रह्मणेपूर्णपात्र दक्षिणादिवा ॥ ॥ ॐ देवागातु वितिसर्पूक्षि ॥ ॐ आप्याय
स्वसमे ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयवस्यत्वा ॥ ॐ इदंपदाविव ॥ ॐ उद्वयंतमस ॥ ॐ श्रीश्चते ॥ ॐ न
मोवरुण०नमस्तु ॥ ॐ अग्ने निन्दुस्यमाम ॥ ॐ यदेवामादिव्यकाद ॥ ॐ यूनत्वा दिव्या ॥ ॐ
आवर्ह्यत्राकाना ॥ ॐ प्रथमाद्वितीये ॥ ॐ समुद्रव दिवंगो०मिति तत्रवाननं उउ ॥ उपयम
नकुशसंस्कानर तिष्ठक्रियाउ ॥ ॐ मनोधृत४ सन्तु न्यादि आशीर्मा ॥ मङ्गल ॥ ॐ स्वस्ति
दध्यादि ॥ ॐ वं गतिम वहिस तन्यादि ॥ आवृगन्धादि ॥ ॐ आडिघ्राणि कलसाआ ॥ ब्री

द ॥ ॐ अग्निमसि इति अग्नि आशीर्वाद ॥ अर्घपात्र दक्षिणा वाचा रिषक ॥ ॐ स्वस्तिन
इन्द्रो ॥ ॐ यदद्य क ॥ चन्दन ॥ ॐ यस्य कुर्म्मति आचार्याशीर्वाद ॥ ॐ तनूपा अग्नेसि इति यज्ञो
पवीतं ॥ ॐ आयुषं इति विष्णु इति तिलक कुर्यात् ॥ ॐ उद्वयं तमस इति कलश विसर्जनं ॥
यमकलश ॥ यमाग्नि चाशङ्काय ॥ ॥ यजमानारिषक ॥ निर्मञ्छन ॥ बलि ॥ वस्त्रवि
य ॥ कलशारिषक ॥ चन्दन सिन्दूर फल पुष्प सगुन आशीर्वाद ॥ ब्राह्मणादि कल
शमालका विषक ॥ आवाधि किषक ॥ ॐ मनोजूति प्रतिष्ठा ॥ ॥ ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्य
इति ब्रह्मा विसर्जनं ॥ ॐ इदं विष्णु प्रणीत विर्जनं ॥ ॐ कल्याण विमूयति ब्रह्माभावनं ॥

ब्रह्मासंस्रवनका द्रव्य गृहित्वा ॥ ॐ अकृताय कर्म्मणे स्वाहा ॥ ॐ सुकृताय कर्म्मणे स्वा
हा ॥ आज्यन ॥ ॐ आत्मवन्तम स्वाहा ॥ प्रायश्चित्त ॥ ॐ भूस्वाहा ॥ भुवः स्वाहा ॥ स्वः स्वाहा ॥
भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ बलरुद्राग्नये स्वाहा ॥ ॐ उद्वयं तमस ॥ ~~ॐ अग्नयेकर्म्म कति~~ ॥ अर्घ
पात्र अधोमुखीकृत्वा ॥ इति कुशण्डिका कर्म्म शूद्र विधि ॥ ~ ० ॥ शुभमस्तु ॥
१सम्वपामीसमापञअषधीरिःसमाषषेयाघसन ।सं० गववतीऊगतीरिःपूर्यनाउसम्मषूमतीर्म
षूमतीरिःपृच्छनाम् ॥

१ॐ नमो गदाधराय॥ श्राद्धविधिं वक्ष्यात॥ ववकीत्राय॥ ॐ अर्घ्यादि॥ यज
मानस्य पितुरद्द गसाम्वत्सलिकश्राद्धे कर्तुं सूर्यायनर्घं नमः॥ ॐ मादा
यकालति॥ ॥ॐ विश्वस्यादवस्या अग्ने वैश्वानर दवस्या कुंद मासन
नमः पूर्ष्यं नमः॥ ॐ विश्वस्यादवस्यापादार्घं नमः॥ ॐ अग्ने वैश्वानर
दवस्यापादार्घं नमः॥ ॥ॐ काश्यपस्य गोत्र यजमानस्य पितामहद्द गसा
म्वत्सलिकश्राद्धे तिलकुशकुंदमासनं स्वधा॥ पितामह तिलकुशकुंदमास

प्र२ नं स्वधा॥ पितामह तिलकुशकुंदमासनं स्वधा॥ पितर पूर्ष्यं स्वधा॥ पितामह
पूर्ष्यं स्वधा॥ प्रपितामह पूर्ष्यं स्वधा॥ ॐ काश्यपस्य गोत्र यजमानस्य पितुरद्दग
साम्वत्सलिकश्राद्धे तिलादक पादार्घं स्वधा॥ ॐ पितामहपादार्घं स्वधा॥
प्रपितामहपादार्घं स्वधा॥ ॥ पिदसिहात्वं॥ ॥स्वधादय कृत्य॥ पितुर्ध
थयवनं॥ यजमानभोवाय॥ विश्वदवनामिचक॥ पितृयज्ञवाक्यननो
सिचक॥ ॥पूट कुसादतन मिनंसतनं॥ ॐ विश्वस्यादवस्या अग्ने वैश्य

न चधवस्याःऽन्द मासनं नमः॥ पृथ्व्यै२॥ ॐ काश्यप स्य गोत्र यजमानस्य पितृ वृ
द्ध सर्वे कलिकाग्रे तिलकुश ऽन्द मासन स्वधा पृथ्व्यै स्वधा॥ ॐ पितामह
तिलकुश ऽन्द मासन स्वधा॥ ॐ प्रपितामह तिलकुश ऽन्द मासन स्वधा॥
पिदि सिहास क पूटकु साःरवाडना॥ ॥ यजमान ववि सावक चनसा
यक॥ ॐ गदाधराय रुद्राय नमः॥ धनञ्जय॥ नारायणपूजा॥ कुश
अंगुलि नह्मावक॥ कुशन यदूथन॥ ॐ ब्रह्मा२॥ ॐ वरुणाय२॥ ॐ अ
पांपतय२॥ ॐ गंगे च यमुने चैव इत्यादि॥ जूतवू निनलखपि काय
वनारवा सदूधन॥ ॐ वज्रसत्व२॥ ॐ विष्णवे२॥ ॐ सदाशिवाय२॥ यजमा
नस्य थमलखनहाय॥ थनन तय स्नानन कूय॥ ॥ पूटकु साःरवा
न ऽकले नमा द्वस्य॥ जवथवति सय्याय यमाल ज्ञाकवाउन॥
थ्याकुश हा मल दक्षिण स्वधा पितृस्य॥ खवथवति सय्याय जमान
ज्ञाकवाउन॥ ॥ लाथंस स्यं स्नानराउ थिस्यं न॥ ॐ सफवाधान सा

चव्य मगी कालिंड नगियोः। चक्रवाकासन द्वियहंसाः सन सिमान सा॥ प
यिजाताः कूनूनत्र वाक्रनावदयाव गाः। प्रस्थिता द्वन मध्याने यूयंत
स्यानिषीद ऊा। अर्द्ध हूमिं गया ध्यात्वा, ध्यात्वा द वंगदायवं। ना स्यं चेवन
मस्कार्यं यत्र अर्द्धय वर्जन॥ ॐ गयाय नमः। ॐ गदाधरायश॥ ॐ पूर्ण
लिका तायश॥ ॥ कुशलखन हाय॥ ॐ भूय वित्रपवित्रावा सर्वांग
स्थगता पिवा। यः स्मर पूण्डुलीकाक्षं स वाह्याभ्यंतरः शुचि॥ विश्वेद
वा दिस्थलखडनूय॥ ॥ ॐ स वाह्याभ्यंतरः शुचिः॥ ॥ यसा स्यैल
कालसंस्थान रात्रिला नथिस्यंत॥ ॐ जयादि॥ काश्यपस्य गोत्र पितृ नूहे
गसी वन्द्र लिकयाद्धं कर्तुं स क्रियाद्यग कालदय्य हूमि गलिलखाक्रनाना
सूसंनिधान मस्तु॥ पितर पितामह प्रपितामहस्य संनिधान मस्तु॥ विश्वे
देवादि पूर्व कय प्यास्नामहंक विश्वे॥ ॐ कूनूस्थे॥ वाक्रनास्यं धाय॥ ॥
लाथंलसंयी विश्वेदेव स्थकं तंन। ॐ कानायन मः। ॐ कानकायन मः॥

॥ ॥ लाकालूस्यैपितृयङ्स । ॐ आयाकुवघ्नसामद्य विश्वेदेवा निशान
नभयत्कषद्युप्रनावघ्नुं स्वव सव स्मृता ॥ अस्त्रावसू स्यानमस्वधा ॥ ॐ
अउकयादहिय भूाद्युविन्नूपा उस्मथेवव । हन गुंवडूनूय छु गुंवक
घुस्मू नउयन ॥ सावित्रीव पिना कोव जयन्ती वायना भिता ॥ नकादं । बू
द्व स्यानमस्वधा ॥ ॐ ॐ स्वाधाता रगयू षा मित्राथवनूनार्यमा । असा
विव स्वासवितास्व स्त्राविश्नूस्मथेवव । ॐ यनद्वादसादित्यास्मर्के थ्याग

र्द्द कर्मनि ॥ द्वादसादित्य स्यानमस्वधा ॥ पितृ पितामह प्रपितामह स्य
पूर्ष स्वधा ॥ ॥ तत४पात्र साधनं ॥ जिजलघालाग्व उर२कायूयकेन ॥
ॐ विश्वेदेवयात्र ॐ दमासनं नमः ॥ ॐ अग्नेवैश्वानरदेवयात्र ॐ द
मासनं नमः ॥ यवितादकन अयूरनं ॥ ॐ अयवित्रय वित्रावा ॥ ॥
सिउलघालार्थयायकं ॥ ॐ विश्वेदेवयात्रउत्कानं ॥ ॐ अग्नेवैश्वानर
देवयात्र उत्कानं ॥ यवितन ॥ ॐ विश्वेदेवयात्रय वित्रकं नमः ॥ ॐ अ

ग्नेवैश्वानरदेवपात्राय पवित्रकं नमः॥ तिलवत्॥ ॐ विश्वेदेवपात्रे ऽं दमा
यैं नमः॥ ॐ अग्नेवैश्वानरदेवपात्रे ऽं दमायैं नमः॥ यवनत्॥ ॐ विश्वे
देवपात्र चन्दनं नमः॥ ॐ अग्नेवैश्वानरदेवपात्र चन्दनं नमः॥ अ
क्षतत्॥ ॐ विश्वेदेवपात्र अक्षतं नमः॥ ॐ अग्नेवैश्वानरदेवपात्र अ
क्षतं नमः॥ स्वानत्॥ ॐ विश्वेदेवपात्र पुष्पं नमः॥ ॐ अग्नेवैश्वानरदे
वपात्र पुष्पं नमः॥ धूपन॥ ॐ विश्वेदेवपात्र धूपं नमः॥ ॐ अग्नेवैश्वा
नरदेवपात्र धूपं नमः॥ ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यो यजमानस्य पितृवृद्धग
सीवच्छत्तिकमार्द्धन सार्घ्यपात्रयनियूर्कु॥ ॐ अग्नेवैश्वानरदेवपात्र
न सार्घ्यपात्रयनियूर्कु॥ स्वानकत्तिखदलकावत्॥ ॥पुनतिखकद्र
डावे॥ ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यो अग्नेवैश्वानरदेवेभ्यो ऽं दमावाहयिष्ये आ
वाह्य॥ ॐ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबला। ये यत्र विहिता
श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥ ॐ आवाह्य॥ मण्डलसत॥ ॥पात्रकाया

वरव वंसन ॥ ॐ विश्वदेवपात्र उदकं नं ॥ पात्र यादस्थानरीन ॥ ॐ विश्व
देवपात्र पूष्पं नमः ॥ पवित्र वाल ॥ ॐ विश्वदेवपात्र वासादनं ॥ ॐ वि
श्वदेवपात्र पवित्रकं नमः ॥ ॐ काश्यपस्य गोत्र यजमानस्य पितृ द्वंग
संविद्ध तिकध्यां ॐ विश्वस्यादेवस्याहस्तार्घं स्वाहा ॥ प्रति अर्घ ॥ ॥
नवं अग्नि वैश्वानर देवपात्र ॥ विश्वदेवपात्र स्नान मस्तु ॥ ॐ विश्वस्या
देवस्या अग्नि वैश्वानर देवस्या चन्दनं नमः ॥ यज्ञोपवीत पुष्प धूप
दीप अत्र गंधादि ॥ ॥ स्वरुगकाया स्पर्श ॥ पितृपात्र उदमासनं स्व
धा ॥ लाकालस्यं ॥ हामलथ्याकूग ॥ पितामहपात्र उदमासनं स्वधा ॥
प्रपितामहपात्र उदमासनं स्वधा ॥ ॐ अयपवित्र पवित्रा वापात्र अस्युद्ध
नी ॥ ॐ पितृपात्र उदकं नं ॥ ॐ पितामहपात्र उदकं नं ॥ ॐ प्रपितामहपा
त्र उदकं नं ॥ ॐ पितृपात्र पवित्रकं स्वधा ॥ ॐ पितामहपात्र पवित्रकं
स्वधा ॥ ॐ प्रपितामहपात्र पवित्रकं स्वधा ॥ ॐ पितृपात्र उदमाय स्व

धा॥ पितामहपात्र ॐ इदमाय स्वधा॥ प्रपितामहपात्र ॐ इदमाय स्वधा॥ ॐ पि
तृपात्र तिलमिदं स्वधा॥ नवं पितामह प्रपितामहे॥ ॐ पितृपात्राय
र्घं स्वधा ३॥ ॐ पितृपात्र चन्दनं स्वधा ३॥ ॐ पितृपात्र धूपं स्वधा॥ ३॥
ॐ काश्यपस्य गोत्र पितृ नृदेव शर्मा वसु रूपिक श्राद्धे पितृ यथा नाम्ना
सार्घ पात्र पवित्र पूजन॥ ॐ पितामह यथा नाम्ना सार्घ पात्र पवित्र पूजन॥
ॐ प्रपितामह यथा नाम्ना सार्घ पात्र पवित्र पूजन॥ ॐ पितृपात्रानि न्यु

ब्जानि सन्तु॥ ॐ पितामहपात्रानि न्युब्जानानि सन्तु॥ ॐ प्रपितामहपात्रानि
सन्तु॥ ॥ह्वनमलतेयाय स्नान दावावाय॥ थ्वकू गहा मल लीरव
ब्राह्मनस थ्वाला छाव स्ववपू बिधि स्यंन॥ ॐ काश्यपस्य गोत्र पित
नृदेव शर्मा वसु रूपिक श्राद्धे पितृ पितामह प्रपितामहस्या छन्दे आवाह
यि ॐ आवाहि॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। स्वा
हायै स्वधायै च नित्यमेव नमो नमः॥ ॐ आवाहि॥ ॥मालव

स्यिप नपात्रसाधनन्याय समानच्छाय च्छानदिसाधनयाङन॥ ॥ॐ पित
नयात्रडल्लनं ॥ॐ पितनयात्रुवावादनं ॥ॐ पितनयात्र पवित्रकं स्वधा॥
ॐ पितनयात्र पर्यं स्वधा॥ॐ काश्यपस्य गोत्र यजमानस्य पितृवाद्र समी
वच्छलिक गोत्रं पितनयथनामनृ तिलादकेद स्वार्घं स्वधा॥ प्रतिसूर्घं॥ ॥
एवं पितामह प्रपितामह। वाक्य इङ्का विशेष सकल नाङडथं॥ ॥
पितनयात्र स्नानमस्ति। वाक्य नास खवविनं ङन॥ ॥ यि दिसि नास्कं हस्का

घविय॥ ॥ॐ पितनय चन्दनं स्वधा॥ यज्ञोपवीत यच्य॥ यि दिसि नास्कं
थ थें ङइना॥ धूप दीप अगन्धादि॥ ॥ लिखतुलूय॥ लाथ लूया व॥
ॐ विश्वेदेव त्यादि मन्त्रन संकल्यसि द्धिमस्तु॥ ॥ लाकाल यावथ्या कृग
नामल पितनयङस॥ ॐ काश्यपस्य गोत्र यजमानस्य मीवच्छलिक गोत्रं
ङ द मन्त्र संकल्य सि द्धिमस्तु॥ अगन्धादि॥ लीखतुलूय॥ ॥ॐ ङ द
सूर्यो ति॥ मितिय सायकं रक्तास्यं न॥ ॐ यथन सूर्योश्चा ति॥ सूर्यस्थ स्वान नाभ॥

॥ ॥कुशन वंयाय॥ॐ अयोध्या मथूरा माया काशीका कीअवन्तिका॥ पू
रीद्वारावतीश्चैया सप्त मोक्ष दायका॥ॐ यू विसय्य विनानि ग्राह्यकोल
सदाय ()॥ दूमोलियकेड लेहस्ते पितृनां मातृदायका॥ ॥तुलसि वतन
दाय॥ॐ सुगंधीचन्दन नेव शुचमीचन्दननव।नह्नमी सिंवयथ कुपितृला
केस्यमा दया॥ ॥गंगमहिमा॥ यदूवासनचाय॥ ध्यकुशहामल॥ॐ पितृ
न पितृछन्दमासन स्वधा॥ॐ पितामह पितृछन्दमासनस्वधा॥प्रपिताम
ह पितृछन्दमासनस्वधा॥ॐ विकन पितृछन्दमासनडयति स्थिनां॥ पितृया
ग्रासनव॥ ॥कारालस पितृकाआदियं सकलतां हत॥ वंसायावकाम
नायाइजाय॥ लान पिस्यंत।ॐ अन्नअमृत साधनि, क्षीरं सर्पिस तण्डुलं। द
धिमधू तिलसंयुक्तं अक्षर्ग पितृसन्तव॥ ॥यजमानस्यक्षाय ॐ पितृमह
कलिद॥ब्राह्मनस्यक्षाय ॐ कुरूयथे॥ ॥पितृवाल ग्वत विदाव [illegible]न॥
ॐ पितृ वंशमनायच मातृ वंनस्ताथैकव।गुरु स्वसरू नवंधूना, यचान्यव

न्यैवास्मृता ॥ यस्मै कृतान्नयक पितृगोत्रदाना विवर्ज्जिता । क्रियायाथा यमता।व
या दीध ४ पञ्चवस्तथा । विनू पात्र मग ह्णद्य ह्मता ह्मता ४ कूल न व ४ न वा पि
तु मया दर्कम नीयं मूय तिष्ठितां ॥ संस्कार हीन वाल विकल पितृ तस्मै उप
तिष्ठितां ॥ विकन पितृ तिलादकार्घमूपतिष्ठितां ॥ विकन पितृ चन्दनेड
प तिष्ठितां ॥ पुष्प ह्णल ताउन धूप दीप यजमानस्य पितृ कृद्ध ग सा
वङ्क लिक श्राद्ध विकल पितृ ह्क स्यो ॰ दह्णल पुष्प ता ह्णल धूप दीप ह्णल

नैवद्या दि सं कल्य मूपतिष्ठितां ॥ खान तंन ॥ ॐ विकनादान ह्णल सं प्राक म
तु ॥ विकना हाँ सुप्रीता नवन्तु ॥ अग्निदग्धाश्च ये जीवा यथ्य दग्धा कूलं मम
४ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्यायान्तिय नगति ॥ अग्रगन्धादि ॥ ॥ उप
स्पर्शनं ॥ पितृपात्र अर्घ्यपूर्णं ॥ कुशान यूव इव ताग याय । ॐ पितृ पि
तुताग स्वधा ॥ ॐ पितामह पितृताग स्वधा ॥ ॐ प्रपितामह पितृताग स्व
धा ॥ यथ ताग ॥ पितृ ग्मठ विडाव द्व दत्त । ॐ अध्यादि ॥ काश्यप स्यरम

त्रयजमानस्य पितुर्वृद्धस सांवत्सलिक श्राद्धे पितर यथानामु एतत्ते पिण्डेन
स्मैस्वधा॥ एतद्वसवश्रन्येषं॥ ॥ तथैवपितामहस्यपिण्डदान॥ ॐ अद्यादि॥
काश्यपस्यन्यादि पितामह यथानामु एतत्ते पिण्डेनस्मैस्वधा॥ एतद्रुद्रादशा
पिण्डेनस्मैस्वधा॥ ॥ प्रपितामहपिण्डदान॥ ॐ अद्यादि॥ काश्यपस्यन्यादि
प्रपितामहयथानामु एतत्ते पिण्डेनस्मैस्वधा॥ एतद्द्वादसादित्य पिण्डसूर्यषं॥
ऋतसालानयकं॥ ॥ लाहाथसिंचकं॥ पितृ पिण्डलाग स्वधा॥ पितामह॥ प्र

पितामह॥ काश्यपस्य न्यादि॥ पितर यथानामु तिलादकार्घं स्वधा॥ पितामह
यथानामु तिलादकार्घं स्वधा॥ प्रपितामह यथानामु तिलादकार्घं स्वधा॥ यज्ञो
पवीत॥३॥ विकलसंदान॥ ॥ पितर चन्दनं स्वधा॥३॥ पितर पिण्डयूपं स्वधा॥
३॥ पितर पिण्डस्कलेनाउनं स्वधा॥३॥ पितर पिण्डधूपं स्वधा॥३॥ पितर पिण्डदीपं
स्वधा॥३॥ काश्यपस्य गोत्र यजमानस्य पितर्वृद्धस सांवत्सलिक श्राद्धे पितर पि
तामह प्रपितामहस्याक्षदरुलयष्प्यनान्धूलधूपदीपनैवेद्यादिसंकल्प सि

द्धिरस्तु ॥ ॥ह्मवनमङ्गलयाप्यकावास्थानवाय॥ लेखथ्याकूगदामल्लघ्रानकी
न॥ ॐ अद्याद्य ॥ कार्यपस्य गात्रयजमानस्य पितृवृद्धं गमांविछ्लिकश्राद्धं पि
तृदानार्च्चन पितृप्रदानयथोक्तफलसंप्राप्तमस्तु॥ गयप्रयूरुनमाहन्द्रपि
तृप्रदानयथोक्तफलसंप्राप्तमस्तु॥ दातानदाकाप्रफल संप्राप्तमस्तु॥ का
लातीतवलालीततनिर्द्दोषमस्तु॥ यस्यादिष्टतस्या अक्षीयमस्तु॥ अक्षगन्धादि॥
पुत्रपितृसाधनधनसमानन्दाय॥ तिलकूगलेखयहास्यंदत्॥ ॐ स्वधारताम

स्तु॥ नातातवंश्या अतकुतनिनलीहास्यदद॥ ॐ दीर्घमायुरस्तु॥ ॥पितृपन्ना
मेगस्थविलिखदवस्थालेखतुष्य॥ शिवाज्ञायमस्तु॥ ॥विवदवदाक्तन
स्वाअसीर्वादयातस्थानविये॥ ॐ लक्ष्मीर्वसति मसवपू लक्ष्मीर्वसतिपुस्तकं।
लक्ष्मीर्वसतसदाग्निष्ठ सोमनस्यददातु मे॥ अक्षतं वा स्तु मयूख्यै मानियूस्थि
ध्वेलिपु म। यथायथयकलावतततदस्तु सदा मम॥ सोमसोमनस्य वा अक्षतं वा
निर्दिष्टं वास्तु॥ ॥लाथलयाव॥ कुसारुगन॥ ॐ विश्वे देवानां अग्रे वै

नुन्हदवानंदिकमन्नमूदकमञ्जीयमस्तु॥ ॥लाकालूयावकूगन्हामल
ॐपितव पितामह प्रपितामह स्यादिकमन्नमूदकमञ्जीयमस्तु॥ ॥पिण्डस
स्थानतन्न॥यासामूर्द्धि ष्ट नासामन्नमञ्जीयमस्तु॥अघ्या ४ पितृ पितामह
प्रपितामहा ४ मस्तु ४॥ ॥वसास्यं स्थानगन्धक॥अस्मत् गोत्र मन्नावर्द्धतां संव
र्द्धतां आयुरारोग्यमैश्वर्य जनुधनलक्ष्मीसंतति संतान वृद्धिरस्तु॥ ॥यसा
स्यमलुलमलखन्हायक॥ॐदातारो नो विवर्द्धतां वेदा संततिरेव च।

गुह्यावनामायगमत वद्धदयंवनाक्षुवा॥अन्नं च नाव कुरवधदधिति व
लक्षमही।याव ताचैव न सन्तु मायाविषमकदावन॥ततोत्रवासत्या ४ सि
ष सन्तु ४॥थुलंखन पिण्डसन्हाय॥शान्तिरेव॥लाथंलूस्यंथमन्हाय॥युद्धि
ष्मेम॥ ॥विश्वेदेवयात्राया पवित्रक पिण्डसत॥पितरस्वासी वाचयि
ष्यं वाच्यतां॥३॥ ॥पितर पात्रयाप वित्रक ले॥पितर पिण्डस्वास्यायतां ३॥
॥ ॥पिण्डयाद्धवन अतकनिनलंखयसाल॥ॐप्रीयंतां पितरः ४ स्वधा॥

तीसाल ॥ ॐ अमुस्वधा ॥ स्वतगस याद्वलंस्वनूय ॥ ॐ पितन पिण्डस्माद
वार्घ अशीयति फिस्वधा ॥३॥ काटालसीद्वेस्वकलूय ॥ ॐ पिण्डयाप्रादका
र्घ अशीयति पिन मुस्वधा ॥३॥ वाटाल स्वतगकाथायवीत लस्वनकायाव
थं न ड कानेयपर्ज कृत्वा ॥ ॥ दक्षिणादानं ॥ विश्वदेवस्य पिण्डसत्राध्व
नस्य पिदिसहासस्य ॥ पिण्डदानप्रतिस्थार्थ यथा श्रद्धा दक्षिणादानं तु
भ्यमहं संप्रददे ॥ अग्रगन्धादि ॥ ॥ वाचनं ॥ ॐ स्वस्ति रवना कुर्वांस्व

स्ति ॥ पिण्डसलूय ॥ ॥ जातिपुष्पदानं ॥ गतागमासपूजा ॥ वेसायाव ॥
ॐ कपिलादियक्ष्मगमानल कस्याऽऽदनासर्नेनमः ॥ आवाहनं ॥ कपिल
नदाये अर्घ नमः ॥ गन्धेव ॥ गेडा सरुडा सुमीला सीमनस्या ॥ वंदनय
ज्ञोपवीतपुष्प स्हल धूप दीप कपिलादियक्ष्मगमानल कस्य स्हलपूष्प
ताम्बूलादिसंकल्पसिद्धिनम्ह ॥ मण्डलस्माप्र ॥ ॐ वंदितासिवसिष्ठनऽऽ
त्यादि ॥ अग्रगन्धादि ॥ ॥ विश्वदेवयात्रसवाद्वलंस्वन यजमान अस्ति

षक ॥ ॐ यदि ह्य त्निमहानागा सर्व्व तीर्थविशारदिता । ब्राह्मनस्य कर्त्ता निश्च
तार्थ सिव सिध्याय यं ७॥ ॥ थत ॥ ॐ यदद्दक ॥ आशीर्व्वाद ॥ ॐ आयुर्व्वलं वि
पुलमस्तु सुख श्रिय स्तु भाग्य काम वस्नु धान्य वकीर्त्ति रस्तु । शील स्तु धर्म्म
मति रस्तु विपुलाय रस्तु सन्तान वृद्धिमन वाञ्छित सिद्धि रस्तु ॥ ॐ सिद्धि रस्तु
क्रियायम्हति ॥ सकलस्त्री ॥ ॥ पितृ सम्प्रदाय ॥ ॐ पिता पितामह श्चैव
तथैव प्रपितामह । तृप्ति रवन्तु यत्तन मयाद त्तेन ह्नुतलं ४ पितना वास

वासूयां ४ पितामह । प्रपितामहा स्तथादित्य । एवं सं चिन्त्य पूजयत् ७॥ माता
महा तृप्तिं ह्यादि ॥ मन्त्र हीनं क्रिया हीनं शक्तिहीनं तथैव च । जय हा मार्ज्ज
नाहीनं, त तत् सर्व्वं क्षमन्तां पितरः ४ ॥ अर्ग गन्धादि ॥ ॥ सूर्यसाक्षि ॥ ॥ विश्वस्था
द्य वस्या स्त्रीनावन्दा रवन्तु ॥ मिन दानकं ॥ ॥ पितृ पितामह प्रपिता
महस्या, स्वर्गलोक विष्णु लोक शिव लोक सं प्राप्त मस्तु ॥ ॥ पक्ष गेम मातृ कं
स्यागूति गमया मी ॥ गायत्री म विसर्ज्जन ॥ ॥ यजमानन पिण्ड उल्काय यो

ति ॥ श्राद्धान्नेन उच्छिष्टपयस्य ॥ पिण्डदाय ॥ ॐ सप्तव्याधानव्यादि ॥ गयायां पि
तृरूपेन स्वयमेव जनार्दनः तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते च ऋणत्रयं ॥ स
मीपगुप्रमानेन पिण्डं दद्यात् गयाशिरे ॥ उद्धरेत् सप्त गोत्राणां कुलमेको
त्तरं शतं ॥ फल्गुतीर्थे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा देवं गदाधरं आत्मानं तारयेत् सद्यो नि
दश पूर्वान् दशापरान् ॥ पिण्डतामत ॥ सखिनतालक ॥ ॐ काञ्चनाख्यवन
गकाटाल ॥ हामलक गन्दलाहाथस भलखिन सितक ॥ ॐ यवासमतु
लजात अपूताय यवान्यवशः तथा हिमादकेनद मश्रीयमूपतिष्ठितां ॥ ॥
अगदवात ॥ त्वयतनयाय ॥ स्वानगथय ॥ मितत ॥ धूप वास सव वसिस कू
धइत ॥ पितयेन ॥ लंखमकुतसन ॥ वाक्ल पदि काटालड डाय लखहाय
की ॐ आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षसुखानि च प्रयच्छन्ति तथा राज्यं न
नॄणां प्रीता पितामहा ॥ आयुर्वृद्धिर्यशो वृद्धिः वृद्धिः प्रज्ञा सुखश्रियः धर्मसं
तानवृद्धिश्च सन्तु सर्वे वृद्धय ॥ स्वधाकार दाय ॥ ॥ ॐ स्वगोत्रा ज्ञातिगम

उग्रसर्वं यिग्रकूलमता ।। ॐ संस्कृता जूपूना ग्रयवर्वपू विहीनका ।। नासर्वं वि
पिमायान्ति वस्त्रादकमयादद ७ ।। थवतिपूनमिमीय ।। ।। नाहा ठर्य नाकयाय ।।
ॐ नाग्निद ग्ध्वाग्निदग्धा यवनव विनासिकान सर्वं वि पिमायान्ति दूमोदक
ति लादक ४ ।। कृगुकाटलसना ।। मवनताहा ठर्यल्लखनलयकावकायक ।। सू
यस्तिकतनक ।। ॐ कृतकर्म सूयायनम ४ ।। वाम्नोन्भदिर्स यूथ ।। पिंदुवाय ।।
कृसांगुवा दिवाय ।। ७ ।। ॐ ति पिंदुथगूद्रयाविधिसमाप्त ४ ।। ७ ।।

श्री अर्कृ कर्यद्रितकर्या दाग्रार्णपित सवनं । सं सिद्धानरथ द्रुम्कान् लंघयन्नकादावन ।।
।। मारठ ।। श्रीह निहनपाथकसमने ।।

राधाजु
सानसीजु जमुनाजु
रागसीजु रागीनीजु
चीनागजामजु विमलावती
मदनमनामजु सुमंगनाजु
दलीनानायजु पूर्नछ्रनीजु
स

[illegible]

मथा सिदामर्ने बिसीखुनी
ग्रवजु गवनीजु
नगरजु.
मजुलाकजु
हनीमानीदुगमलनी
वृनीसिनछामी

३

थुंगा य साक
घृत्न जाना १
कुस ना थ्रा १
न साकु थ्रा १
सन नाना १
न की नाना १
सिंन मसग
कत्र न नि ४
केवृन मस १
कुंस्रना नती ४
वान मस २
वथन कुकुमनीनाय नगमस्र था ग
ग थव नाना १
न ग मस्र नाना १
आ

गृग्र मसग
कुसनी ज्ञानार
न साकु ज्ञानार
ा सन्द मसग
न की मसग
सिंन मसइ
कत्र न नीर
कवृन वामननी
कुसना ननीर
वान मसा १
थ्रथन कुकुमनी
ग थव मसग



[illegible] नाक पाला ४ स्व स्वदिगिवसिता ४ स्व स्व मूडा ४ स्व युक्ता [illegible] दिवा दिग्ध भव सलिलु विमदाज नमद वा ४ स्व [illegible]
मूका म ४ स्व निध्यानगण्ड वबदूक स्कू लिल माह काव सिद्धे गुयाद दान्तु रव उवसू मलियक्ष्म पूर्ण गुरा स्व [illegible]
४ स्य द्वाय स्त्र नाग ग्रह गण सकल रूत नक्ष त्रिगण वा यव षथि यमासा लिलि जिनगुसकला यवनक्षत्र
४ स्व व गृह ४ कलुषिता द्वकसठ नयय सा वर्तु सुग्रीव चन्द्रा ४ सपी गसि ञ्जु नि [illegible] नि ऋदी सस्वपुद सक
[illegible] लक्ष्मी ॥ १ ह्वावार्थ नाम सिंहित्रकदित नमस्वं वक्र नतावयास्ठ नजाति ४ ष्रा गवर्क कृगवकलह
[illegible] विक्रस्व नक्षत्रा निहिताय ध्रुग्राव मथगज गतिर्न दान वन्द्राद्वि नध्यसार्यवैय [illegible] वनम कामिद
[illegible] विष्णु ॥ ॥ योगि यस्याध वित्रिज वधलकव ४ लिंगमाका गद्रूप नक्षत्र पुष्य मालाप्रह [illegible] कुसम

नत्र चन्द्रार्क वह्नि ४ रुत्रो सप्त सप्त मूढ्रा गु [illegible] गिविसि स्व वास त्यु या तावय पादो वद यत्वा विना वेदगदित
[illegible] पातु वादि यत्र लिखि ॥ ॥ यक्ती यत्र ना गन्दुर्गी लक्ष्मी गणदेव ना स्कन्दाधिप नमस्त्व गस्कस्याव
गनतु नम ४ ॥ स्तुहि हिमस्य खाजनायूना सानेप विधयामसि । उबतु दाहि नातु वा पिदं क्षतु रु षट्ठं ॥ गीत ऋदाहि नातु
वाग्निदं [illegible] सबजं । जन्कि काम ग्रिवजु नय हृद्वा दि ४ लितु वागमतु ॥ जजात पकृपता याध्रुह दयं मम कृपया । विपुलव
नं [illegible] कार्णे वव जानव दकामयं ॥ मोग्रु स्कन्द पूजा ग्रुवतदमू योनव ४ यं गन्ध लाहित गी वकृष्ण व गु नमः स्कन्द ॥
[illegible] स्थान [illegible] गवर्ग मयूरयथा । उलदक्क तुदक्षा उवव दमस लिखिक्रतो ॥ गत्र वा निध नेया कुजयर्व [illegible]
[illegible] वाग्नि प्रत्यक्ष देवता ॥ वरदादृ वमाङ्गि मम पूर्णो ग्रहस्थमी । यावदा दिवस्पत [illegible] तावत
[illegible] उक्ति तावर्की व व याम [illegible] यस्कनपुत्रा वलु [illegible] मानान जीवती ॥ [illegible] पश्च ग्राम प्रकाश [illegible]